डॉ. शशि भूषण
अतिथि सहायक प्राध्यापक
हिन्दी विभाग
एस. आर. ए. पी. कॉलेज,
बारा-चकिया।

B.A. Part - 1
हिन्दी प्रतिष्ठा
Paper - 1

Date:- 14-02-2023

'राम जपु, राम जपु--' का भावार्थ

राम जपु, राम जपु, राम जपु बावरे।
घोर भव नीर निधि नाम निज नाम रे॥

एक ही साधन सब रिद्धि सिद्धि साधि रे।
ग्रसे कलि रोग जोग संजम समाधि रे॥

भलो जो है पोच जो है दाहिनो जो बाम रे।
राम नाम ही सो अंत सब ही को काम रे॥

जग नभ बाटिका रही है फल फूलि रे।
धुवां कैसे धौरहर देखि तू न भूलि रे॥

राम नाम छांडि जो भरोसो करै और रे।
तुलसी परोसो त्यागि मांगै कूर कौर रे॥

भावार्थ :-

इस संसार रूपी समुंद्र से पार उतरने के लिए श्री राम नाम रूपी अपनी नाव है। सिर्फ एक ही साधन (श्री राम नाम) के बल से सब ऋद्धि-सिद्धि सध जाएगी; वैसे भी योग, संयम, समाधि आदि साधनों को कलिकाल (कलयुग) रूपी रोग से ग्रस रखा है।

भला हो या बुरा हो, उल्टा हो

कि सीधा हो सभी को अन्त समय में (मृत्यु के समय) राम नाम ही काम आयेगा। इस संसार के आकाश में भ्रम से जो बगीचे के समान फल फूल दिख रहे हैं वे भ्रम के अलावा कुछ भी नहीं हैं, धुँए के बादल सरीखे पल पल दिखने मिटने वाले सांसारिक पदार्थों को देखकर पगले (पग+ले = पाँव पकड़ ले) तू भूल मत।

श्री राम नाम को छोड़ कर जो दूसरों का भरोसा करता है वह उस मूर्ख के समान है जो सामने परोस कर रखे भोजन को छोड़ कर एक-एक कौर के लिये कुत्ते के समान घर-घर माँगता फिरता है।